ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

जनसंपर्क कार्यालय

PUBLIC RELATIONS OFFICE

आज़ादी का अमृत महोत्सव

ज्ञान की संपदा संस्कृत में सर्वाधिक सुरक्षित है : प्रो. कृष्ण कुमार सिंह

हिंदी विवि में मनाया संस्कृत दिवस

वर्धा, 20 अगस्त 2024 : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में साहित्य विद्यापीठ के संस्कृत विभाग द्वारा सोमवार, 19 अगस्त को महादेवी वर्मा सभागार में आयोजित संस्कृत दिवस समारोह की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने कहा कि विरासत के रूप में संग्रहित ज्ञान संस्कृत में सुरक्षित है। हमे संस्कृत में व्याप्त अपार ज्ञान राशि को प्रसारित करने के लिए संकल्पबद्ध होने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि हमे अपनी पुरातन परंपरा से निरंतर परिचित होने के लिए संस्कृत का ज्ञानार्जन करना चाहिए।

इस अवसर मुख्य अतिथि के रूप में ऑनलाइन संबोधित करते हुए सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति पद्मश्री प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने कहा कि संस्कृत दिवस वाणी का पर्व है। संस्कृत वाणी का भाषिक स्वरूप भी है। संस्कृत का

स्वरूप छांदस के रूप में था और वेदों में छांदस का ही प्रयोग किया गया है। उन्होंने कहा कि ऋषियों ने मनुष्य की भाषा के रूप छांदस भाषा को ही प्रतिष्ठित किया। संस्कृत की विशेषता बताते हुए उन्होंने कहा कि यह सबसे धनी भाषा है जिसमें शब्दों का भंडार अपार है। यह शब्दों की अनंत संभावनाओं से यह अमरत्व की भाषा है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में जामिया-मिल्लिया-इस्लामिया, नई दिल्ली के संस्कृत विभाग के सहायक आचार्य डॉ. धनंजय मणि त्रिपाठी ने कहा कि स्व की शिक्षा ही संस्कृत का प्रमुख लक्ष है। यह भाषा सर्वांग पक्ष को लेकर चलती है। संस्कृत साहित्य विविध कलाओं को समाहित किए हुए है। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति में संस्कृत के महत्व को रेखांकित किया।

पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत

ई-मेल/E-mail: mgahvpro@gmail.com, वेबसाइट/Website: www.hindivishwa.org

दूरभाष :+91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305

साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता, संस्कृत विभाग के अध्यक्ष एवं कार्यक्रम के समन्वयक प्रो. अवधेश कुमार ने प्रास्ताविकी में कहा कि वाड़मय की दृष्टि से संस्कृत महत्वपूर्ण भाषा है। रामायण एवं महाभारत जैसे महान ग्रंथ संस्कृत में है। कम शब्दों में बड़ी बात कहने का सामर्थ इस भाषा में है। संस्कृत साहित्य ज्ञान की परंपरा को समाहित करता है। मंगलाचरण डॉ. वागीश राज शुक्ल ने तथा सरस्वती वंदना साहिब देव शर्मा ने प्रस्तुत की।

कार्यक्रम का स्वागत भाषण संस्कृत विभाग के प्रभारी एवं सहायक प्रोफेसर डॉ. प्रदीप ने किया। संचालन संस्कृत विभाग के सहायक प्रोफेसर जगदिश नारायण तिवारी ने किया तथा भारतीय भाषा विभाग के सहायक प्रोफेसर राम कृपाल ने आभार माना। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

कार्यक्रम में प्रो. बंशीधर पाण्डेय, प्रो. जनार्दन कुमार तिवारी, डॉ. जयंत उपाध्याय, डॉ. वरूण कुमार उपाध्याय, डॉ. कृष्णचंद पाण्डेय, डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी, डॉ. उमेश कुमार सिंह, डॉ. परिमल प्रियदर्शी, डॉ. रणंजय कुमार सिंह, डॉ. अभिषेक सिंह, डॉ. सूर्यप्रकाश पाण्डेय, डॉ. सूरजीत कुमार सिंह, डॉ. शैलेश कदम, बी. एस. मिरगे आदि सहित बडी संख्या में शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
जनसंपर्क कार्यालय
PUBLIC RELATIONS OFFICE

ज्ञानसंपदा संस्कृतमध्ये सर्वाधिक सुरक्षित : प्रो. कृष्ण कुमार सिंह

हिंदी विश्वविद्यालयात संस्कृत दिन साजरा

वर्धा, 20 ऑगस्ट 2024: महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयात साहित्य विद्यापीठाच्या संस्कृत विभागातर्फे सोमवार, 19 ऑगस्ट रोजी महादेवी वर्मा सभागृहात आयोजित संस्कृत दिन सोहळ्याचे अध्यक्ष म्हणून बोलतांना कुलगुरू प्रो. कृष्णकुमार सिंह म्हणाले की वारसा म्हणून संकलित केलेली ज्ञान संपदा संस्कृतमध्ये मोठया प्रमाणात सुरक्षित आहे. संस्कृतमध्ये असलेल्या अफाट ज्ञानाचा प्रसार करण्यासाठी आपण दृढनिश्चय करणे आवश्यक आहे. ते म्हणाले की आपल्या प्राचीन परंपरेची ओळख होण्यासाठी आपण संस्कृतचे ज्ञान घेतले पाहिजे.

ऑनलाइन कार्यक्रमाला प्रमुख पाहुणे म्हणून संबोधित करताना संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालयाचे माजी कुलगुरू पद्मश्री प्रो. अभिराज राजेंद्र मिश्र म्हणाले की संस्कृत दिन हा वाणीचा उत्सव आहे. संस्कृत वाणीलाही भाषिक स्वरूप आहे. संस्कृतचे स्वरूप छांदक या स्वरूपात होते आणि वेदांमध्ये फक्त छांदक वापरले गेले आहे. ते म्हणाले की ऋषीमुनींनी छंदोबद्ध भाषेला मानवी भाषा म्हणून स्थापित केले. संस्कृतचे वैशिष्ट्य सांगताना ते म्हणाले की ही सर्वात श्रीमंत भाषा आहे ज्यामध्ये शब्दांचा साठा अफाट आहे. शब्दांच्या असीम शक्यतांसह ती अमरत्वाची भाषा आहे.

विशेष अतिथी म्हणून जामिया-मिलिया-इस्लामिया, नवी दिल्ली येथील संस्कृत विभागाचे सहायक आचार्य डॉ. धनंजय मणि त्रिपाठी म्हणाले की स्वयंशिक्षण हे संस्कृतचे मुख्य ध्येय आहे. ही भाषा एकूण पैलू हाताळते. संस्कृत साहित्यात सर्व कलांचा समावेश होतो. राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरणात संस्कृतचे महत्त्व त्यांनी अधोरेखित केले.

साहित्य विद्यापीठाचे अधिष्ठाता, संस्कृत विभागाचे अध्यक्ष व कार्यक्रमाचे समन्वयक प्रो. अवधेश कुमार यांनी प्रस्तावनेत संस्कृत ही वाङ्मयच्या दृष्टिकोनातून महत्त्वाची भाषा असल्याचे सांगितले. रामायण, महाभारत यांसारखे महान ग्रंथ संस्कृतमध्ये आहेत. या भाषेत मोठ्या गोष्टी मोजक्या शब्दांत सांगण्याची ताकद आहे.संस्कृत साहित्यात ज्ञानाची परंपरा आहे.

मंगलाचरण डॉ. वागीश राज शुक्ला यांनी केले तर सरस्वती वंदना साहिब देव शर्मा यांनी सादर केली. कार्यक्रमाचे स्वागत भाषण संस्कृत विभागाचे प्रभारी व सहायक प्रोफेसर डॉ. प्रदीप यांनी केले. संचालन संस्कृत विभागाचे सहायक प्रोफेसर जगदीश नारायण तिवारी यांनी केले तर भारतीय भाषा विभागाचे सहायक प्रोफेसर राम कृपाल यांनी आभार मानले. राष्ट्रगीताने कार्यक्रमाची सांगता झाली.

कार्यक्रमात प्रो. बंशीधर पाण्डेय, प्रो. जनार्दन कुमार तिवारी, डॉ. जयंत उपाध्याय, डॉ. वरूण कुमार उपाध्याय, डॉ. कृष्णचंद पाण्डेय, डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी, डॉ. उमेश कुमार सिंह, डॉ. परिमल प्रियदर्शी, डॉ. रणंजय कुमार सिंह डॉ. अभिषेक सिंह, डॉ. सूरजीत कुमार सिंह डॉ. सूर्यप्रकाश पाण्डेय, डॉ. शैलेश कदम, बी. एस. मिरगे यांच्या सह मोठया संख्येने शोधार्थी व विद्यार्थी उपस्थित होते.

पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत
ई-मेल/E-mail: mgahvpro@gmail.com, वेबसाइट/Website: www.hindivishwa.org
दूरभाष :+91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305